

“दुख तो हमारा आहार है”

लेखिका-अर्चना तनेजा-जयपुर

श्री राजी महाराज की मेहर से हम सुन्दर साथ ने बहुत बार बीतक सुनी है और इस बात का ज्ञान हम सबको है कि हम रूहों ने परमधाम में राजी से इशक रब्द किया और उस खेल को देखने की चाहना की जिसे अक्षर ब्रह्म पल में बनाता व मिटाता है। राजी ने बहुत बार मना भी किया कि यह खेल मत देखो पर रूहों को तो दुख वाला खेल देखने की लगन थी। तब हार के धनी ने ये खेल हमें दिखाया, जैसा की वाणी में भी लिखा है।

खेल देखोगे दुख का, याद देसी में ए सुख में देऊंगा सब साहेदिया, पर छोड़ न सको ये दुख

इस तरह हम इस दुख का खेल देखने आ गये। पर अब ऐसा क्यों होता है। जो चीज हम देखने आये हैं उससे डर जाएं या इस दुख के कारण इमनि तक बेचने लगे कि हमारा राजी पर से विश्वास उठ जाये। हम दुख देखने आये है। दुख तो हमारा आहार है। हमें तो इसके साथ रहना है, इसके साथ ही सोना है व इसके साथ चलना है क्यों कि हम रूहों की ये ही तो खास पहचान है कि हम दुख के साथ रहेंगी। दुनिया तो इससे भागती फिरेगी क्यों कि उनको इस दुख के मोल का क्या पता पर हमें तो मालूम है कि ये दुख हमारे लिये कितना अमूल्य है क्यों कि इसी दुख से ही राजी का दुख भी

लगता है। अर्थात् राजी से बिछड़ने का दुख कि कैसे हम राजी के साथ प्यार व सुख के प्याले पीते थे और अब कैसा जहर पी रहे हैं। ये दुख मन में लगते ही राजी मिल जायेंगे जैसा कि श्री जी की वाणी में लिखा है।

दुख से पीउ जी मिलसी, सुरषे न मिलया कोए,
अपने धनी का मिलना तो, सो दुख ही से होए,

हम सब राजी का मिलन व राजी का प्यार तो चाहते हैं लेकिन दुख से भागते हैं। हम आशिक तो हैं पर आशिकी से डरते है। ऐसा क्यों जब हम उस पार ब्रह्म के अंग हैं तो हमारे दिल शेरों की तरह क्यों नहीं हैं। हम क्यों जरा-जरा सी बात पर गीदड़ों की तरह मिमयाने लगते है। हमें तो शेरों की तरह गरज कर चलना है। राजी महाराज हमें शेर बनाते हैं लेकिन हम गीदड़ों ही में घुसते चले जाते हैं। हमारी ये ही तो खास पहचान है कि हमें इस माया का कोई दुख लगेगा ही नहीं। पर हम तो समझते हैं कि हम बड़े दुखी है। पर यदि हम ये समझ जाते कि इस दुख का मोल क्या है तो शायद हमारे मुख से यह शब्द नहीं निकलते जैसा कि वाणी में लिखा है।

श्री महामीत कहे इन दुख को, मोल न किया जाये
लाख बेर सिर दीजिये, तो भी सर भर न आवे ताये
राजी की मेहर से ही राजी का दर्द या दुख

आता है। कोई चाहे कि ये दुख मुझे भी लग जाये तो ये आसान नहीं है। या ये इतना सस्ता नहीं है कि इसे हर कोई खरीद ले, ये तो राजी की अपार मेहर से ही मिलता है। क्योंकि हम तो चाहते हैं सुख को पर राजी अपनी मेहर करके ये न्यामत बरसाते हैं। जैसा कि वाणी में श्री जी ने फरमाया है।

मैं तो चाहा सुख को, पर धनी की मुझ पर मेहर ताथे दुख फेर फेर दिया, अब सुख लगत है जेहर राजी का दुख भी राजी की मेहर से ही मिलता है। वैसे माया के दुख के साथ ही राजी की याद आती है। ऐसा हम अपने जीवन में भी देखें कि जब तक हमें सुख आराम मिलता रहता है तब तक हम उस सुख के नशे में लिप्त माया में खोये रहते हैं। हमें कुछ पता नहीं होता कि मैं कौन हूँ कहां हूँ और कहां खो रही हूँ और धाम धनी कहाँ है। उनकी याद जरा लेश मात्र हमारे दिल में नहीं रहती है। पर जरा सा माया का दुख मिला नहीं कि दिन रात जुबान पर राजी के नाम के सिवा कुछ नहीं होता है। इस तरह हम जरा गौर से देखें कि वास्तव में किसका मूल्य ज्यादा है। तो हम यही कहेंगे कि दुख का मोल बड़ा है क्यों कि जिस दुख से धनी का मिलन हो या धनी की याद आये तो वह दुख हमारे लिये अमूल्य है। जैसा कि वाणी में लिखा है।

जिस दुख से पीऊ मिले सो दुख मैं लेऊं रे बुलाय वैसे एक तरफ सारी बात अनुभव पर भी आ जाती है। हम जिस तरह अनुभव करेंगे हमें वैसे ही एहसास होगा। यदि हम दुख अनुभव करते हैं तो वह दुख हमारे प्राण तक खींच लेगा।

यदि हम दुख को दुख माने ही नहीं तो हमें माया में लगेगा ही नहीं कि हम दुख देखने आये हैं। ये ठीक है कि राजी हमें दुख दिखाने जरूर आये है पर दुख देने नहीं आये क्योंकि वो सदा सत सुख के दातार है। जो सुख के देने वाले हैं वो दुख दे ही कैसे सकते हैं। जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

धनी न देवे दुख तिल जेता,

दुख तो मिलता है दुनिया को,

हमें तो राजी सुख के सिवा कुछ देते ही नहीं घर के अखण्ड सुख तक तो वह इस माया में आके रुहों को बाँट रहे हैं। तो वह दुख दे ही कैसे सकते हैं पर वो ही सारी बात अपने ध्यान की या अनुभव की आ जाती है। यदि हम हमेशा सुख व आनन्द का अनुभव करें व सदा राजी के चरणों में ध्यान रखें तो क्या हिम्मत जो माया अपना जहर फैला सके, पर अन्तर सिर्फ ये रह जाता है कि हम अपना ध्यान श्री राजी के चरणों से हटाकर माया की तरफ लगा देते हैं। अब जहाँ ध्यान लगेगा वहाँ से वो ही चीज मिलेगी। यदि ध्यान माया की तरफ है तो माया ही मिलेगी या ये कह सकते हैं कि दुख ही मिलेगा। यदि ये ही ध्यान राजी के चरणों में है तो हमें एक सच सुख की प्राप्ति होगी व माया के सुखों की भी प्राप्ति होगी। वस सारी बात अपने ही ध्यान की है। तो क्यों राजी से ये कह देते हैं कि हम बड़े दुखी है। जबकि देखा जाये तो हमारे जैसा कोई सुखी ही नहीं।

दुख तो हमारा आहार है, औरन को दुख खाये दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साथ निभाये